

संगीत कला विद् (अंतिम वर्ष)

गायन / स्वरवाद्य

प्रथम प्रश्न पत्र (संगीत शास्त्र)

समय 3 घण्टे

पूर्णांक : 50

1. गांधर्व गान एवं मार्ग-देशी का सामान्य परिचय निबन्ध एवं अनिबद्ध गान की सामान्य जानकारी एवं अनिबद्ध के अंतर्गत रागालापति और रूपकालापति के भेद-प्रभेदों का अध्ययन।
2. भरत के श्रुति निदर्शन की चतुःसारणा का परिचय।
3. वीणा के तार पर पं. अहोबल द्वारा शुद्ध- विकृत स्वरों की स्थापना और पं. श्री निवास द्वारा उनका स्पष्टीकरण।
4. थाट राग वर्गीकरण का सामान्य परिचय। शुद्ध छायालग एवं संकीर्ण रागों का वर्गीकरण समय - सिद्धांत के अनुसार रागों का वर्गीकरण।
5. गणितानुसार हिन्दुस्तानी संगीत के 32 और कर्नाटक संगीत के 72 मेलों की निर्माण विधि स्वरों की संख्या के आधार पर एक थाट से 484 राग बनाने की विधि।
6. जीवनियाँ एवं सांगीतिक योगदान : उस्ताद फैयाज खाँ, उस्ताद बड़े गुलाम अली खाँ, पं. ओमकारनाथ ठाकुर, पं. रविशंकर, उ. बिस्मिल्लाह खाँ।

1. गांधर्व गान एवं मार्ग-देशी का सामान्य परिचय निबन्ध एवं अनिबद्ध गान की सामान्य जानकारी एवं अनिबद्ध के अंतर्गत रागालापि और रूपकालापि के भेद-प्रभेदों का अध्ययन।

गीत - स्वरों का वह समूह जिसमें मनका रंजन हूँ

गीत के भेद

गांधर्व - संगीत स्वर्ग में गंधर्व द्वारा गाया जाता था जिसका उद्देश्य मोक्ष प्राप्ति है।

गान - जो संगीत पंडित ने अपनी बुद्धि से उत्पन्न किया जिसका उपयोग लोकरंजन के निमित्त प्रचलित है

मार्ग संगीत- गांधर्व - गान को ही क्रमशः मार्ग व दोषी माना गया है मार्ग संगीत व है जिसका प्रयोग ब्रह्मा के बाद भारत ने किया

देसी संगीत - भिन्न-भिन्न देशों के जन अपनी रूचि के अनुसार उसे गा बजाकर और नाच कर प्रसन्नता प्राप्त करते हैं अथवा हृदय का रंजन करते हैं।

निबद्ध गान - जो गायन में हो अर्थात् ताल में बंधी ताल बध हो अर्थात् हुई रचनाओं का निबद्ध गान कहकर पुकारा जाता है। प्राचीन काल में निबद्ध गान के अंतर्गत प्रबंध, वस्तु, रूपक आदि गायनों के प्रकार प्रचलित थे। परंतु आधुनिक युग में निबद्ध गान के अंतर्गत ख्याल, ठुमरी, दादरा, ध्रुपद आदि आते हैं। इन सब प्रकारों को ताल के साथ अर्थात् ताल में बांधकर गाया जाता है।

अनिबद्ध गान - जो गायन बिना ताल के गाया अथवा बजाया जाता है। वह अनिबद्ध गायन कहलाता है। अर्थात् ताल रहित रचनाएँ अनिबद्ध गान के अंतर्गत आती हैं। प्राचीन काल में अनिबद्ध गान के प्रकार रागालाप, रूपकालाप आलापिगान आदि प्रचलित थे।

(आधुनिक समय में इसके अंतर्गत आलाप गायन प्रचलित है जो राग के गीत गाने के पूर्व गाया अथवा बजाया जाता है।)

रागालाप- प्राचीनकाल में आलाप करने का यही ढंग प्रचलित था। इसे अनिबद्ध गान कहकर पुकारा जाता था क्योंकि इसके गायन में ताल का बन्धन नहीं होता था। गायक गीत गाने के पूर्व उस राग का स्वरूप रागालाप द्वारा खींचता था, जिस प्रकार आधुनिक समय में गायक अथवा वादक गीत के पूर्व राग का आलाप करता है। रागालाप द्वारा राग के दस लक्षणों को दिखलाया जाता था।

राग के दस लक्षण इस प्रकार हैं-

- ग्रह
- अंश
- न्यास
- अल्पत्व
- बहुत्व
- षाड़व

- औड़व
- अपन्यास
- मन्द्र,
- तार

रूपकालाप-प्राचीन समय में आलाप करने का दूसरा प्रकार रूपकालाप कहलाता था, जैसा कि नाम से ही विदित होता है। इसमें गायक विभिन्न प्रकार से राग का विस्तार करके राग का स्वरूप खींचता था। गायन का यह प्रकार अनिबद्ध गायन के अन्तर्गत आता था। आजकल इस गायन का प्रचार नहीं है।

थाट राग वर्गीकरण का सामान्य परिचय।

शुद्ध छायालग एवं संकीर्ण रागों का वर्गीकरण समय - सिद्धांत के अनुसार रागों का वर्गीकरण

थाट-वर्गीकरण के अन्तर्गत समस्त रागों को दस भागों में विभाजित कर दिया गया, जिन्हें थाट की संज्ञा दी गई है। इन थाटों का नाम अलग-अलग रखने के लिये हमारे शास्त्रकारों ने यह सोचा कि प्रत्येक थाट से उत्पन्न माने गये सबसे अधिक प्रसिद्ध राग का नाम उसके थाट को दे दिया जाय और उन लोगों ने ऐसा ही किया। अतः आश्रय राग वे राग हैं, जिनके आधार पर थाटों का नामकरण हुआ। थाट दस माने गये, अतः दस आश्रय राग भी हैं। दसो थाट के नाम हैं- कल्याण, बिलावल, खमाज, भैरव, भैरवी, आसावरी, काफी, पूर्वी, मारवा और तोड़ी।

राग - रागिनी पद्धति

प्रत्येक राग का एक परिवार होता था जिसमें रागिनियो पुत्रों पुत्र वधू आदि सम्मिलित होते थे

कुल 6 राग माने गए थे

8- 8 पुत्र राग एवं पुत्र वधू

चार मत

सोमेश्वर शिव मत - 6 राग

प्रत्येक की 6 6 रागिनी

8 पुत्र राग

भैरव श्री वसंत पंचम मेघ नट

काल्लोनाथ मत - 6 राग

6 - 6 रागिनी -----36

5 राग पुत्र

भैरव श्री वसंत पंचम मेघ नट

भरत मत - 6 राग

5- 5 रागिनियां

8 पुत्र राग

8 भार्या (वधु)

भैरव मालकौंस डी डाल श्री दीपक मेघ

हनुमान मत - भरत मत

पुत्र वधू

183 इससे पूर्व पहला मुगल गुप्त साहिब ने इस पद्धति को अशुद्ध बताया व किया आगे चलकर भातखंडे जी ने राग रागिनी तथा अन्य पद्धतियों को गलत बनाया वह ठाट राग पद्धति का प्रचार किया

शुद्ध, छायालग तथा संकीर्ण राग

शुद्ध राग-जिन रागों में शुद्ध शास्त्रीय नियमों का निर्वाह होता है तथा जो राग और अन्य रागों से स्वतंत्र होते हैं, शुद्ध राग कहलाते हैं। इन रागों में दूसरे रागों की छाया नहीं आ सकती। इनका विस्तार स्वतंत्र होता है-जैसे राग कल्याण, काफी इत्यादि। शुद्ध राग को शास्त्रकारों ने बतलाया है "शास्त्रोक्त नियमाद् रंजकत्वं भवति" अर्थात् शास्त्रोक्त नियमानुसार गाया जाकर रंजन करनेवाला राग शुद्ध राग कहलाता है। अधिकतर शुद्ध राग से किसी एक ही रस की अभिव्यक्ति होती है-जैसे राग कल्याण से करुण रस की।

छायालग राग-कुछ राग ऐसे होते हैं जिनमें किसी अन्य राग की छाया स्पष्ट होती है, उसे छायालग राग कहते हैं। उदाहरण के लिए शुद्ध कल्याण, मालगुंजी, पटदीप, बहार इत्यादि राग छायालग राग कहलाते हैं, क्योंकि इनमें अन्य रागों को छाया आती है। शास्त्रकार छायालग राग को इस प्रकार कहते हैं, "छायालगत्वं नामान्यच्छाया लगत्वेन रक्तहेतुत्वं भवति" अर्थात् छायालग रागों में अन्य किसी राग की छाया दीखती है और इस प्रकार रंजन होता है।

संकीर्ण राग-शुद्ध तथा छायालग रागों के मिश्रण से संकीर्ण राग की उत्पत्ति होती है। जिस प्रकार छायालग राग में किसी अन्य राग की छाया दीखती है उसी प्रकार संकीर्ण राग में अनेक रागों की छाया दीखती है, जैसे-राग पीलू, मित्र काफी, मिश्र खमाज इत्यादि। अधिकतर ठुमरियों के लिए जो राग गाये जाते हैं वे संकीर्ण राग कहे जा सकते हैं। शास्त्रकारों ने संकीर्ण राग को इस प्रकार स्पष्ट किया है, "शुद्ध छायालग मुख्यत्वेन रक्त हेतुत्वं भवति" अर्थात् शुद्ध तथा छायालग रागों के मिश्रण से संकीर्ण रागों की उत्पत्ति होती है। यह मिश्रण जन-रंजन के लिए होता है। ऐसे रागों में विभिन्न रसों की अभिव्यक्ति होती है, क्योंकि ठुमरी गाते समय गायक अनेक भावों को उत्पन्न करके भिन्न-भिन्न रसों की अनुभूति कराता है।

समय - सिद्धांत के अनुसार रागों का वर्गीकरण

भारतीय रागों में यह विशेषता है कि उनके गाने और बनाने का एक निश्चित समय होता है। अपने निश्चित समय पर ही प्रत्येक राग आकर्षक तथा सर लगते हैं। बहुत से राग ऐसे होते हैं जो किसी विशेष मसम या ऋतु में गाये और बजाये जाते हैं। जैसे वर्षा ऋतु में महाकागान वसन्त ऋतु में बहार, सन्त आदि को गाने और बनाने में विशेष आनन्द आता इन रागों के गीतों को अधिकतर इन ऋतुओं में तो गाया हो जाता है, परन्तु इसके अलावा इनकी प्रत्येक मौसम में दिन या रात के किसी विशेष प्रहरों में भी गाया और बजाया जाता है। दिन और रात को प्रहरों में बाँट दिया गया है तथा प्रत्येक हिन्दुस्तानी राग दिन अथवा रात के किसी विशेष प्रहर में गाया और बजाया जाता है। राग के समय को निर्धारित करने के लिए कुछ नियम हैं, जैसे पूर्व राग, उत्तर राग, सन्धिप्रकाश राग, अध्वदर्शक स्वर आदि। इन नियमों में से नीचे पूर्व राग, उत्तर राग तथा सन्धि-प्रकाश रागों का वर्णन किया जाता है।

पूर्व राग तथा उत्तर राग विद्वानों ने सप्तक के ७ स्वरों को दो भागों में बाँट दिया है। पहला भाग 'सा' से 'म' तक अर्थात् सारेगम तथा दूसरा 'प' से 'सा' तक अर्थात् प ध नि सा है। इन्हीं दो विभागों को सप्तक का पूर्वाह्न और उत्तराग कहते हैं।

इस प्रकार दिन तथा रात के २४ घण्टों को भी दो भागों में बाँट दिया है पहला भाग पूर्वाह्न १२ बजे दिन से १२ बजे रात तक तथा दूसरा भाग उत्तराह्न में १२ बजे रात से दूसरे दिन के १२ बजे दिन तक होता है।

पूर्व राग जिन रागों के वादी स्वर सप्तक के पूर्वाह्न में अर्थात् सा रे ग म स्वरों में होते हैं ये पूर्वाह्न वादी राग अथवा पूर्व जागो के गाने का समय 12:00 दिन से 12:00 रात तक होता है उदाहरण के लिए राग खमाज का वादी स्वर गंधार है इसलिए यह पूर्व राग हुआ और इसे 12:00 बजे दिन से 12:00 बजे रात के अंदर ही गाया बजाया।

उत्तरांग किसी राग के वादी स्वर सप्तक के उपरांत अर्थात् प ध नी सां से होता है वह उत्तरांग अथवा कहलाते हैं 12:00 बजे रात से 12:00 बजे दिन दोपहर तक होता है उदाहरण के लिए राग भैरवी में ध वादी है इसलिए यह उत्तरांग है और इसके गाने का समय भी 12:00 बजे रात से 12:00 दोपहर के अंदर है।

जिन रागों में मध्यम तथा पंचम स्वर वादी होते हैं उनका समय बतलाने में कुछ कठिनाई पड़ती है क्योंकि ये स्वर दोनों विभागों के अन्तर्गत आते हैं इसलिए रागों का समय हमको मालूम कर लेना चाहिए।

सन्धि- प्रकाश - राग जो राग रात और दिन की सन्धि वेला में - ये अथवा बजाये जाते हैं उन्हें सन्धि प्रकाश राग कहकर पुकारा जाता है। दिन और रात की सन्धि २४ घण्टे में दो बार होती है। एक सुबह जब रात के बाद दिन निकलता है तथा दूसरी शाम को जब सूर्य डूबता है और रात आती है। सन्धि प्रकाश का समय विद्वानों ने ४ बजे से ७ बजे तक का माना है अर्थात् सुबह ४ बजे से ७ बजे तक तथा शाम को ४ बजे से ७ बजे तक का समय सन्धि प्रकाश राग का समय माना जाता है। सुबह तथा शाम को ऐसे समय में गाया और बजाया जानेवाला राग ही सन्धि प्रकाश है।

सन्धि- प्रकाश राग में यह विशेषता पायी जाती है कि उसमें ऋषभ और धैवत स्वर कोमल लगते हैं। भैरवी, कालिंगड़ा, पूर्वी आदि। इसके साथ ही इन रागों में गान्धार स्वर शुद्ध होना आवश्यक है। कुछ राग ऐसे हैं जो इस विशेषता के अपवादस्वरूप हैं, जैसे - राग मारवा। इस राग में ऋषभ स्वर कोमल लगता है लेकिन धैवत स्वर शुद्ध है। इन अपवादों को देखते हुए कुछ विद्वानों ने सन्धि प्रकाश राग के लिए केवल ऋषभ स्वर का कोमल होना आवश्यक समझा है। धैवत स्वर कोमल हो अथवा शुद्ध, परन्तु गान्धार स्वर को शुद्ध होना चाहिए।

परमेल प्रवेशक राग- स्वतः नाम से यह स्पष्ट है कि जो राग एक थाट से दूसरे थाट में प्रवेश कराते हैं, परमेल प्रवेशक राग कहलाते हैं। उदाहरणार्थ जैजैवन्ती परमेलप्रवेशक राग कहलाता है। इसका गायन-समय रात्रि के अन्तिम प्रहर का अंतिम भाग है। इसके पूर्व खमाज थाट के राग समाप्त हो चुकते हैं और काफी थाट के रागों का समय आने वाला होता है। जैजैवन्ती ऐसा ही राग है, जो खमाज थाट से काफी में प्रवेश कराता है, क्योंकि इसमें दोनों की विशेषतायें विद्यमान हैं। खमाज थाट के रागों में रे, ग शुद्ध तथा दोनों निषाद प्रयोग किये जाते हैं। दूसरी ओर काफी थाट के रागों में ग का कोमल होना तो आवश्यक है ही, अधिकतर दोनों निषाद भी प्रयोग किये जाते हैं। जैजैवन्ती में ये दोनों विशेषतायें हैं और इसमें शुद्ध स्वरों के साथ-साथ दोनों निषाद प्रयोग किये जाते हैं। इसलिये इसे परमेलप्रवेशक राग कहा गया है। मुलतानी और मारवा भी इसी प्रकार के राग हैं। मेल और थाट या ठाट पर्यायवाची शब्द माने गये हैं।

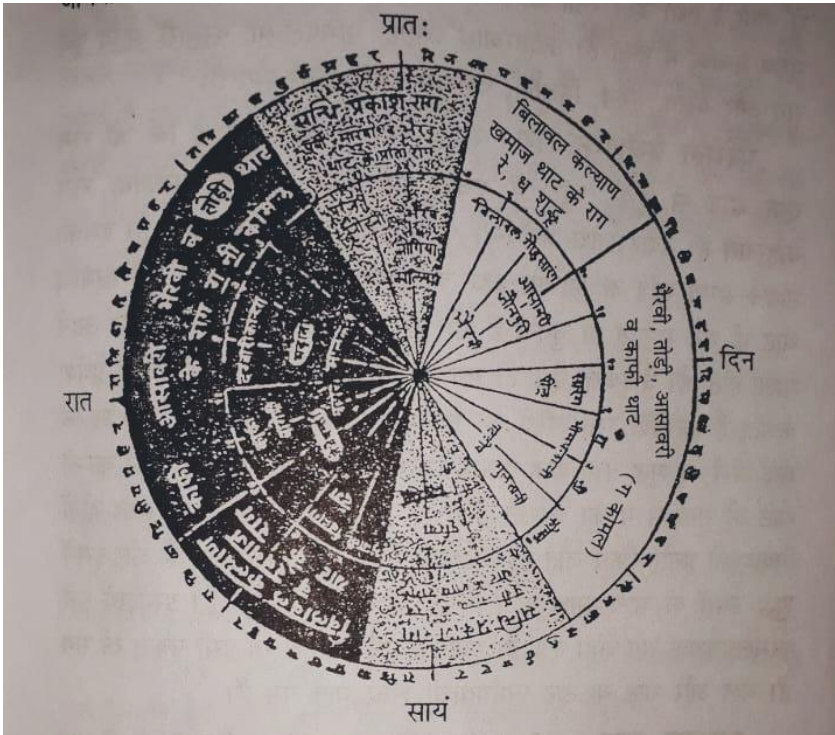
आश्रय राग- कभी-कभी संगीत के प्रारंभिक विद्यार्थियों में यह भ्रामक धारणा देखी जाती है कि पहले थाट और तत्पश्चात् रागों की रचना हुई होगी। इसका मुख्य कारण यह है कि वे इस कथन को अक्षरशः सत्य समझते हैं कि भूपाली राग कल्याण थाट से उत्पन्न हुआ है। वास्तव में यह कथन स्वयं भ्रामक है। होना यह चाहिये कि कल्याण थाट से उत्पन्न माना गया है, न कि उत्पन्न हुआ है। थाट-वर्गीकरण के बहुत दिनों पूर्व से राग गायन प्रचलित था। हाँ, यह अवश्य है कि उस समय कुछ रागों को राग और कुछ को रागिनी कहा जाता था। मध्य काल में यह पद्धति प्रचार में थी

रागों का समय-चक्र

पीछे हम बता चुके हैं कि सभी रागों को मुख्य तीन वर्गों में विभाजित किया जा सकता है- रे कोमल ग शुद्ध रागों का वर्ग, रे ग शुद्ध रागों का वर्ग और ग कोमल वाले रागों का वर्ग। प्रथम वर्ग के राग 4 से 7 तक, द्वितीय के 7 से 10 तक और तृतीय के समस्त राग 10 से 7 तक गाये-बजाये जाते हैं। प्रथम के अन्तर्गत भैरव, पूर्वी और मारवा थाट के राग, दूसरे के अन्तर्गत बिलावल, खमाज और कल्याण थाट के राग तथा तीसरे वर्ग के अन्तर्गत काफी, आसावरी, भैरवी और तोड़ी थाट के सभी राग आते हैं।

भारतीय समय नुसार प्रातः काल 6 बजे से प्रारम्भ होता है। अगर 6 के बजाय 7 मान लिया जाय, तो दिन के आठो प्रहर का मिलान राग के उपर्युक्त वर्गों से ठीक बैठ जायेगा। ऐसी स्थिति में दिन के प्रथम प्रहर में 7 से 10 तक रे ग शुद्ध वाले राग, दूसरे और तीसरे प्रहर में 10 से 4 बजे तक ग कोमल वाले राग तथा दिन के चौथे प्रहर, अर्थात् सायंकालीन संधि प्रकाश के समय में 4 से 7 तक रे कोमल व ग शुद्ध वाले राग गाये जाते हैं। ठीक इसी प्रकार का क्रम रात्रि के चारो प्रहर में चलता है। रात्रि के प्रथम प्रहर में भी रे ग शुद्ध वाले राग, दूसरे और तीसरे प्रहर में ग कोमल वाले राग तथा चौथे प्रहर अर्थात् प्रातःकालीन

संधिप्रकाश के समय में रे कोमल ग शुद्ध वाले राग गाए जाते हैं नीचे के चित्र से यह और भी स्पष्ट हो जाएगा



गणितानुसार हिन्दुस्तानी संगीत के 32 और कर्नाटक संगीत के 72 मेलों की निर्माण विधि स्वरों की संख्या के आधार पर एक थाट से 484 राग बनाने की विधि।

बारह स्वरों से बत्तीस ठाठ

यह बताया जा चुका है कि वेंकटमखी पंडित के स्वर हमारे स्वरों के समान नहीं थे, इसलिए उन्होंने अपने स्वरों के हिसाब से बहत्तर ठाठ बनाए। किन्तु यदि हम वेंकटमखी के स्वरों पर ध्यान न देकर अपनी हिन्दुस्तानी संगीत-पद्धति के बारह स्वरों के अनुसार ठाठ-रचना करें, तो उनके अनुसार केवल बत्तीस ठाठ ही बनने संभव हैं। वे किस प्रकार बनेंगे यह यहाँ बताया जाता है।

सप्तक के पूर्वांग और उत्तरांग, ये दो भाग पहले का तरह कर लीजिए :—

१. सा रे रे ग ग म और प ध नि नि सां।

| सप्तक के पहले भाग से | सप्तक के दूसरे भाग से |
|----------------------|-----------------------|
| १. सा रे गु म | १. प धु नि सां |
| २. सा रे ग म | २. प धु नि सां |
| ३. सा रे गु म | ३. प ध नि सां |
| ४. सा रे ग म | ४. प ध नि सां |

इस प्रकार स्वर वाले ८ मेल बनाने के बाद अब इनको मिलाकर ७ स्वर वाले मेल बनाए जाएं तो $4 \times 4 = 16$ मेल इस प्रकार बनेगा

शुद्ध मध्यम वाले सोलह मेल

| | |
|----------------------------|---------------------------|
| *१. सा रे गु म प धु नि सां | ५. सा रे ग म प धु नि सां |
| २. सा रे गु म प धु नि सां | *६. सा रे ग म प धु नि सां |
| ३. सा रे गु म प ध नि सां | ७. सा रे ग म प ध नि सां |
| ४. सा रे गु म प ध नि सां | ८. सा रे ग म प ध नि सां |

| | |
|----------------------------|---------------------------|
| *९. सा रे गु म प धु नि सां | १३. सा रे ग म प धु नि सां |
| १०. सा रे गु म प धु नि सां | १४. सा रे ग म प धु नि सां |
| *११. सा रे गु म प ध नि सां | *१५. सा रे ग म प ध नि सां |
| १२. सा रे गु म प ध नि सां | *१६. सा रे ग म प ध नि सां |

उपर्युक्त सोलह ठाठों में शुद्ध मध्यम लगाया गया है, अब यदि हम शुद्ध की बजाय तीव्र मध्यम लगाकर बिल्कुल इसी प्रकार से स्वर लिखें तो सोलह मेल और बन जायेंगे :—

| | |
|--------------------------|--------------------------|
| ६. सा रे ग म प ध नि सां | १३. सा रे ग म प ध नि सा |
| १०. सा रे ग म प ध नि सां | १४. सा रे ग म प ध नि सां |
| ११. सा रे ग म प ध नि सां | १५. सा रे ग म प ध नि सां |
| १२. सा रे ग म प ध नि सां | १६. सा रे ग म प ध नि सां |

इस प्रकार सोलह मेल शुद्ध मध्यम वाले और सोलह मेल तीव्र मध्यम वाले मिलकर $१६ + १६ = ३२$ मेल हमारी पद्धति से बन सकते हैं और इनमें सिलसिलेवा स्वरों में से कोई नहीं छूटा तथा एक स्वर के दो रूप पास-पास भी नहीं आये।

कर्नाटक संगीत के ७२ मेलों की निर्माण विधि

सत्रहवीं शताब्दी में दक्षिणी संगीत के प्रसिद्ध विद्वान् पण्डित व्यंकटमखी ने अपनी पुस्तक 'चतुर्दण्डिप्रकाशिका' में गणित के अनुसार एक सप्तक से कुल ७२ थाटों की उत्पत्ति सिद्ध की। उन्होंने अपनी पुस्तक में यह भी सिद्ध किया कि एक थाट से रागों की जातियों के आधार पर गणितानुसार कुल ४८४ राग बन सकते हैं।

पं० व्यंकटमखी के ७२ थाटों की उत्पत्ति समझने के पहले थाट के नीचे लिखे नियमों को ध्यान में रखना चाहिए। -

- (१) थाट में हमेशा सातो स्वर होने चाहिए।
- (२) थाट के सातों स्वर क्रमानुसार होने चाहिए।
- (३) थाट में केवल आरोह की आवश्यकता होती है।
- (४) थाट में रंजकता का होना आवश्यक नहीं है, क्योंकि वे गाये नहीं जाते। इसलिए घाट में एक स्वर का शुद्ध तथा विकृत दोनों रूप आ सकता है।

ऊपर लिखे नियमों को देखकर हम कह सकते हैं कि नियम नं० २ तथा नियम नं० ४ में आपस में विरोध हो सकता है क्योंकि नियम नं० २ के अनुसार थाट के सातों स्वर क्रमानुसार होने चाहिए, अर्थात् सा रे ग म प नि इस क्रम से होने चाहिए परन्तु नियम नं० ४ के अनुसार घाट में एक स्वर के दो रूप कभी-कभी आ सकते हैं। यहाँ पर यह देखना है कि यदि हम एक स्वर के दो रूप लेते हैं तो स्वर क्रमानुसार हो ही नहीं सकते, क्योंकि ७ स्वरों में यदि एक स्वर दो बार अपने दो रूपों में आ जाय तो कोई दूसरा स्वर अवश्य छोड़ना पड़ेगा। उदाहरण के लिए- 'रे' स्वर के शुद्ध तथा विकृत (कोमल) दो रूप लेकर सप्तक के ७ स्वर क्रमानुसार हो ही नहीं सकते, क्योंकि 'रे' दो होने से केवल ५ स्वर और लिये जा सकते हैं जबकि हमको ६ स्वर और लेना चाहिए। सा रे रे म प ध नि यहाँ पर 'रे' के दो रूप होने से गान्धार स्वर को छोड़ना पड़ा, इसलिए स्वर क्रमानुसार नहीं हैं। इस प्रकार हमने देखा कि साधारणतः जब एक स्वर के दो रूप आ जाते हैं तब सात स्वरों का क्रम भंग हो जाता है।

परन्तु यह कठिनाई पं० व्यंकटमखी के स्वरों के साथ उत्पन्न नहीं होती क्योंकि दक्षिण पद्धति के स्वरों में कुछ स्वरों को दो-दो नामों से पुकारा जाता है जिससे क्रम भंग नहीं होने पाता । अतएव यह आवश्यक है कि हम दक्षिणी संगीत-पद्धतियों के १२ स्वरों को समझ लें। नीचे उत्तरी एवं दक्षिणी संगीत-पद्धतियों के १२ स्वरों को दिया जाता है

| पं० व्यंकटमखी के स्वर | हिन्दुस्तानी स्वर |
|----------------------------------|-------------------|
| (१) 'सा' | 'सा' |
| (२) शुद्ध 'रे' | कोमल 'रे' |
| (३) पंचश्रुति 'रे' या शुद्ध 'ग' | ... शुद्ध 'रे' |
| (४) षट्श्रुति 'रे' या साधारण 'ग' | ... कोमल 'रे' |
| (५) अन्तर 'ग' | ... शुद्ध 'ग' |
| (६) शुद्ध 'म' | ... शुद्ध 'म' |
| (७) प्रति 'म' या भरावली 'म' | ... तीव्र 'म' |
| (८) 'प' | 'प' |
| (९) शुद्ध 'ध' | ... कोमल 'ध' |

| | | |
|----------------------------------|-----|------------|
| (१०) पंचश्रुति 'ध' या शुद्ध 'नि' | ... | शुद्ध 'ध' |
| (११) षट्श्रुति 'ध' या कौशिक 'नि' | ... | कोमल 'नि' |
| (१२) काकली 'नि' | ... | शुद्ध 'नि' |

ऊपर लिखे गये व्यंकटमखी के स्वरों को देखकर यह मालूम पड़ता है कि स्वर संख्या ३, ४, १० और ११ को २-२ नामों से पुकारा जाता है। इसमें विशेषता यह है कि यदि 'रे' स्वर के दो रूप आते हैं तो उनमें पहला स्वर शुद्ध होगा तथा दूसरा स्वर पंचश्रुति 'रे' न होकर शुद्ध 'ग' होगा। उदाहरण के लिए सा रे रे म स्वर—'सा' शुद्ध 'रे' शुद्ध 'ग' और शुद्ध 'म' होंगे। इस प्रकार स्वर क्रमानुसार रहेंगे। कहने का अर्थ यह हुआ कि स्वरों में क्रम रखने के लिए स्वरों को एक-दूसरे नामों से पुकारा जायगा। इसी प्रकार सा ग म स्वर 'सा', षट्श्रुति रे, अन्तर 'ग' और शुद्ध 'म' होंगे।

अब हमको यह देखना है कि पं० व्यंकटमखी ने सप्तक के १२ स्वरों से गणितानुसार किस प्रकार ७२ थाटों की स्थापना की। सप्तक के १२ स्वर इस प्रकार हैं—सा रे रे ग म म प ध ध नी नी। अब सरलता के लिए इन १२ स्वरों में से तीव्र मध्यम को अलग कर देते हैं और अब उनके सप्तक के १२ स्वर इस प्रकार होंगे :—

सा रे रे ग ग म प ध ध नी नि सां
अब इन स्वरों को पूर्वार्द्ध तथा उत्तरार्द्ध में ऐसे दो बराबर भागों में विभाजित करते हैं जो इस प्रकार होंगे :—

| | |
|----------------|-----------------|
| पूर्वार्द्ध | उत्तरार्द्ध |
| सा रे रे ग ग म | प ध ध नी नि सां |

इन दोनों विभागों के मिश्रण से हमको ७ स्वर वाले मेल अथवा थाट बनाना है क्योंकि थाट में हमेशा ७ स्वर होते हैं। अतएव यदि हम ४ स्वर पूर्वार्द्ध से लेकर और ४ स्वर उत्तरार्द्ध से लेकर मिलायें तो ८ स्वरों का एक मेल अथवा थाट तैयार होगा जिसमें आठवाँ स्वर तार षड्ज होगा। इस प्रकार तार षड्ज को छोड़कर केवल ७ स्वरों का

थाट बन सकेगा। अब हमें यह देखना है कि ऊपर लिखे पूर्वार्द्ध और उत्तरार्द्ध के ६-६ स्वरों के कुल कितने स्वर-समूह बन सकते हैं।

| | |
|------------------------------|-------------------------------|
| पूर्वार्द्ध (सा रे रे ग ग म) | उत्तरार्द्ध (प ध ध नी नि सां) |
| १—सा रे रे म | ... १—प ध ध सां |
| २—सा रे ग म | ... २—प ध नी सां |
| ३—सा रे ग म | ... ३—प ध नी सां |
| ४—सा रे ग म | ... ४—प ध नी सां |
| ५—सा रे ग म | ... ५—प म नि सां |
| ६—सा ग ग म | ... ६—प नी नि सां |

अब पूर्वार्द्ध के स्वर को उत्तरार्द्ध के स्वरों में मिलाकर हमें मेल अथवा थाट बनाना है। पूर्वार्द्ध के ६ स्वर-समूहों के प्रत्येक स्वर-समूहों में उत्तरार्द्ध के ६ स्वर-समूहों को क्रम से जोड़ देंगे। उदाहरण के लिए—पूर्वार्द्ध के पहले स्वर-समूह में उत्तरार्द्ध के ६ स्वर-समूह क्रमशः जोड़ने से हमें ६ मेल अथवा थाट प्राप्त होंगे जो इस प्रकार होंगे :—

| |
|-------------------------|
| १—सा रे रे म प ध ध सां |
| २—सा रे रे म प ध नी सां |
| ३—सा रे रे म प ध नि सां |
| ४—सा रे रे म प ध नी सां |
| ५—सा रे रे म प ध नी सां |
| ६—सा रे रे म प नी नी नि |

इस प्रकार पूर्वार्द्ध के स्वर-समूहों में उत्तरार्द्ध के ६ स्वर-समूह क्रमशः जोड़ देंगे और कुल मेल अथवा थाट $६ \times ६ = ३६$ बनेंगे।

ऊपर समझाये गये ३६ मेल हमको शुद्ध मध्यम के सप्तक से प्राप्त हुए। यदि शुद्ध मध्यम के स्थान पर हम तीव्र मध्यम लगायें तो इसी प्रकार ६ मेल या थाट तीव्र मध्यम के बन सकते हैं।

शुद्ध मध्यम तथा तीव्र मध्यम से कुल मिलाकर हमें $३६ + ३६ = ७२$ मेल या थाट प्राप्त होंगे।

नोट :—ऊपर लिखे स्वर-समूहों में केवल ४ स्वर-समूह ऐसे हैं जिनमें हिन्दुस्तानी संगीत-पद्धति के अनुसार स्वर क्रमानुसार नहीं हैं, परन्तु व्यंकटमखी के (कर्नाटकी पद्धति के) स्वरों के अनुसार वे इस प्रकार होंगे :—

- (१) सा रे रे म = 'सा', शुद्ध 'रे', शुद्ध 'ग' और शुद्ध 'म'।
- (२) सा गु ग म = 'सा', षट्श्रुति 'रे', अन्तर 'ग' और शुद्ध 'म'।
- (३) प ध ध सां = 'प', शुद्ध 'ध', शुद्ध 'नि' और 'सां'।
- (४) प नी नि सां = 'प', षट्श्रुति 'ध', काकली 'नि' 'सां'।

एक थाट से 484 राग बनाने की विधि।

एक थाट में ४८४ रागों का उत्पत्ति—सत्रहवीं शताब्दी में 'चतुर्दण्डप्रकाशिका' नामक संगीत-ग्रन्थ में पं० व्यंकटमखी ने यह भी सिद्ध किया कि एक थाट से गणितानुसार ४८४ रागों की उत्पत्ति हो सकती है। रागों की यह उत्पत्ति रागों की जातियों पर आधारित है। रागों में लगनेवाले स्वरों की विभिन्न संख्याओं के कारण उनमें जो अलग-अलग वर्ग किये गये हैं उन्हें रागों की जातियाँ कहते हैं। राग में अधिक-से-अधिक ७ स्वर लगते हैं और कम-से-कम ५। इस प्रकार कुल तीन प्रकार की मुख्य जातियाँ होती हैं—(१) सम्पूर्ण—जिसमें ७ स्वर लगते हैं। (२) षाड़व—जिसमें ६ स्वर लगते हैं। (३) औड़व—जिसमें ५ स्वर लगते हैं।

यह तो हुई मुख्य तीन जातियाँ, परन्तु रागों में आरोह तथा अवरोह दोनों होते हैं और ऐसा हो सकता है कि किसी राग के आरोह में ७ स्वर लेंगे और अवरोह में ७ से कम लेंगे। इस बात का ध्यान रखते हुए इन तीन जातियों को ३-३ विभागों में बाँट दिया है अर्थात् कुल ९ जातियाँ होती हैं, जो इस प्रकार हैं :—

(१) सम्पूर्ण-सम्पूर्ण, (२) सम्पूर्ण-षाड़व, (३) सम्पूर्ण-औड़व, (४) षाड़व-सम्पूर्ण, (५) षाड़व-षाड़व, (६) षाड़व-औड़व, (७) औड़व-सम्पूर्ण, (८) औड़व-षाड़व, (९) औड़व-औड़व। इन जातियों का वर्णन पुस्तक के प्रथम भाग में किया जा चुका है। अब हमको यह देखना चाहिए कि ऊपर लिखी ९ जातियों में अधिक-से-अधिक कितने राग किस प्रकार उत्पन्न हो सकते हैं। उदाहरण के लिए हम एक शुद्ध थाट (बिलावल को लेकर) उससे उत्पन्न रागों

(आरोह-अवरोह) को देखते हैं। नीचे इस थाट के भिन्न-भिन्न ९ जातियों के आधार पर गणितानुसार उत्पन्न रागों की संख्या दी जाती है।

(१) सम्पूर्ण-सम्पूर्ण—इस जाति से केवल ४ राग उत्पन्न होंगे क्योंकि आरोह तथा अवरोह दोनों ही सम्पूर्ण हैं।

(२) सम्पूर्ण-षाड़व—इस जाति से कुल ४ राग उत्पन्न हो सकते हैं, क्योंकि हर एक में आरोह तो सम्पूर्ण रहेगा, परन्तु अवरोह में क्रमानुसार १-१ स्वर छोड़ते रहेंगे। केवल षड्ज को वर्णित नहीं करेंगे और इस प्रकार कुल ६ राग बन सकेंगे :—

- (१) सारे ग म प ध नि । ध प म ग रे सा
- (२) सारे ग म प ध नि । नि प म ग रे सा
- (३) सारे ग म प ध नि । नि ध म ग रे सा
- (४) सारे ग म प ध नि । नि ध प ग रे सा
- (५) सारे ग म प ध नि । नि ध प म रे सा
- (६) सारे ग म प ध नि । नि ध प म ग सा

(३) सम्पूर्ण-औड़व—इस जाति के कुल १५ राग बन सकेंगे, क्योंकि हर राग का आरोह तो सम्पूर्ण रहेगा, परन्तु अवरोह में हर बार २-२ स्वरों की जोड़ी छोड़ते रहेंगे। अवरोह में क्रमानुसार १५ बार २-२ स्वरों की जोड़ियाँ इस प्रकार छोड़ देंगे :—

- (१) निध (२) निप (३) निम (४) निग (५) निरे (६) धप (७) धम (८) धग (९) धरे (१०) पम (११) पग (१२) परे (१३) मग (१४) मरे तथा (१५) गरे।

(४) षाड़व-सम्पूर्ण—इस जाति के केवल ६ राग बन सकेंगे। कारण यह कि प्रत्येक के आरोह में १-१ करके ६ स्वर छोड़ते रहेंगे, परन्तु अवरोह सबका सम्पूर्ण रहेगा। जिस प्रकार सम्पूर्ण षाड़व

तथा पंचम ये दो स्वर राग में एक साथ वर्जित नहीं हो सकते । परन्तु ऊपर दिये गये कई रागों में ये स्वर छोड़ दिये गये हैं । इस नियम को देखते हुए भी बहुत-से राग नियम के विरुद्ध हैं ।

यहाँ हमने देखा कि रागों के नियम के अनुसार बहुत-से आरोह-अवरोह जो गणितानुसार बनाये गये हैं, राग नहीं कहे जा सकते । इस प्रकार रागों की संख्या ३४८४८ से बहुत कम हो जायगी । प्रचार में तो केवल २५० अथवा ३०० से अधिक राग सुनने में नहीं आते ।

जीवनियाँ एवं सांगीतिक योगदान

- उस्ताद फैयाज खाँ
- उस्ताद बड़े गुलाम अली खाँ
- पं. ओमकारनाथ ठाकुर
- पं. रविशंकर
- उ. बिस्मिल्लाह खाँ।

उस्ताद फैयाज खाँ

उस्ताद फैयाज खान सन 1886 में आगरा में हुआ आपके पिता सफदर हुसैन का निधन आपके जन्म से तीन-चार माह पूर्व भी हो गया था आपका पालन पोषण आपके नाना जी के द्वारा ही हुआ आपके संगीत की शिक्षा अपने नाना द्वारा ही प्राप्त हुई आप बाल्यकाल से ही अच्छा गाते थे मैसूर राज्य के नरेश आपकी गायन से अत्यधिक प्रभावित हुए सन 1906 में स्वर्ण पदक तथा सन् 1911 में आपको आफताब ए मौसी की उपाधि से अलंकृत किया बड़ौदा की महाराजा आपके गायन से अत्यधिक प्रभावित हुए और आपको अपने दरबार में सम्मिलित कर लिया

व्यक्तिगत जीवन में बहुत सुरुचि संपन्न व्यक्ति थे कायदे से सज धज कर इत्र लगाकर और पान का डब्बा साथ रखकर महफिल में बैठते थे खान साहब काफी नीचे स्वर से गाते थे गाते समय अपने स्वभाव का अत्यधिक ध्यान रखते थे खास आपका गला भरा जवाबी दार और बुलंद था खासा ख्याल ध्रुपद धमार ठुमरी टप्पा गजल कव्वाली आदि गायन में पारंगत थे उनकी गायत्री बाजूबंद खुल खुल जाए बहुत प्रसिद्ध थे खान साहब विस्तृत आलाप करने के बाद गीत की बंदिश प्रारंभ करते थे खास आपका स्वर लगाने का ढंग आगरा घराने को प्रदर्शित करता है खास आपका पितृवंश रंगीले तथा मातृ वंश आगरा घराने दोनों को मिला जुला कर रंग दिखाए तथा उन्होंने अपनी गायकी में इन दोनों का भरपूर प्रयोग किया आगरा घराने की जब चर्चा होती है तो उस्ताद फैयाज खास आपका स्मरण अपने आप हो जाता है बीसवीं सदी के पूर्वार्ध में जो सम्मान फैयाज खास आपको मिला उतना किसी मुसलमान गायक को नहीं प्राप्त हुआ

उन्होंने अपनी रचनाएं प्रेम पिया के नाम से कि उन्होंने अच्छी बंदिशों की भी रचना की है बड़ौदा में रहते हुए नरेश की आज्ञा लेकर आप संगीत सम्मेलन तथा आकाशवाणी के कार्यक्रमों में भाग लेने के लिए जाते थे आपके प्रिय रागों में ललित जय जय अवंती शुक्राय दरबारी तोड़ी रामकली पूरिया पूर्वी आदि थे आप के प्रमुख शिक्षाओं में दिलीप चंद्र वेदी विलायत हुसैन शराफत हुसैन अमजद हॉसैन तथा अता हुसैन का नाम प्रमुखता में लिया जाता है उस्ताद फैयाज हुसैन साहब का देहावसान 5 नवंबर 1950 को हृदय गति रुकने से बड़ौदा में हुआ।

उस्ताद बड़े गुलाम अली खाँ

उस्ताद बड़े गुलाम अली खाँ साहब का जन्म सन् 1900 में लाहौर में उस्ताद काले खाँ के यहाँ हुआ। आपके पिता का वंश परंपरा संगीतज्ञों की थी बचपन से ही घर में संगीत का माहौल था। इसी माहौल में आपने अपने चाचा से संगीत की शिक्षा देना प्रारंभ शिक्षा ग्रहण करना शुरू किया। किंतु कुछ समय के पश्चात् आपके चाचा का निधन हो गया। चाचा के निधन के बाद आपके पिता ने आपको संगीत शिक्षा देना प्रारंभ किया। आपके छोटे 3 भाई भी थे जिनका नाम क्रमशः बरकत अली, मुबारक अली एवं अमीन अली खाँ था। कुछ समय तक आपने सारंगी वादन भी किया।

अपने पिता से कुछ दिनों तक संगीत शिक्षा लेने के बाद आप बम्बई चले गये और वहाँ जाकर उस्ताद सिंधी खाँ से शास्त्रीय गायन की शिक्षा प्राप्त करने लगे। कुछ दिन वहाँ रहने के बाद आप अपने पिता के साथ लाहौर वापस आ गये। इसके पश्चात् आपकी ख्याति धीरे धीरे बढ़ने लगी। आपने अपने जीवन का सर्वप्रथम कार्यक्रम कलकत्ता के संगीत सम्मेलन में दिया, इस कार्यक्रम में आपकी ख्याति बढ़ने लगी।

उन्नीस सौ सैतालिस में देश विभाजन के बाद आप हिंदुस्तान छोड़कर पाकिस्तान चले गये। इस कार्यक्रम देने के लिए भारत भी आते मध्ये आप किंतु खाँ साहब का मन पाकिस्तान में नहीं लगा। खाँ ने भारत लौटने की साहव इच्छा व्यक्त की और तत्कालीन भारत सरकार ने आपकी इच्छा सहर्ष स्वीकार कर ली। खाँ साहब भारत आकर बम्बई में रहने लगे खा साहब ने शास्त्रीय संगीत के समय साथ- साथ फिल्म संगीत में भी अत्यधिक प्रसिद्धि प्राप्त की। आपकी गाई 'तुमरियाँ' आये न बालम का 'कुरू सजनी' एवं 'याद पिया की आये, अत्यधिक लोकप्रिय हुई। खाँ साहब सन् 1960 में पक्षाघात से पीडित हो गये और चारपाई पकड़ ली। चारपाई पकड़ते ही अर्थाभाव से पीडित हो गये। क्योंकि खाँ साहब की प्रवृत्ति धनसंचय करने की नहीं थी, जो धन अर्जित करते थे, उसे कुछ समय में खर्च कर दिया करते थे। इस कारणवश महाराष्ट्र सरकार ने सन् 1960 में इलाज के लिए उन्हें पाँच हजार रुपये की आर्थिक सहायता प्रदान की। स्वस्थ होने के बाद खाँ साहब पुनः संगीत का कार्यक्रम देने लगे।

बड़े गुलाम अली साहब स्वभाव से बड़े सूरत हृदय के थे। लोगों से बड़े मिलन सारिता से मिलते थे। खाँ साहब बिना गायन के नरी रह सकते थे। खाँ साहब को स्वरों पर इतना अधिकार था कि कठिन से कठिन स्वर-समूहों को बड़े सहज ढंग से कह देते थे। पंजाब गाने में की आपका कोई जवाब नहीं था। आवाज आपकी जितनी लचीली थी डुमरी आपका व्यक्तित्व उतना ही अत्यधिक विशालकाय था। आपके चेहरे पर बड़ी- बड़ी मूँछें कुर्ता तथा बंद मोहरी का पायजामा तथा काली रामपुरी टोपी आपका विशेष पहनावा था।

संगीत घरानों की खाँ साहब बहुत आलोचना करते थे। उनका कहना था कि संगीत की अवनति इन्हीं घरानों की वजह से हो रही है इन घरानों की आड़ में लोग मनमानी कर रहे हैं, इन्हीं प्रकार के लोग इन घरानों की आलोचना करा रही है। खाँ साहब संगीत की सेवा करते हुए 23 अप्रैल, 1968 को हम सभी से विदा हो गये। उनके पुत्र मुनव्वर अली का देहान्त भी हो गया।

ओमकार नाथ ठाकुर

प्रातः स्मरणीय विष्णु दिगम्बर के योग्य • शिष्यों में पण्डित ओमकार नाथ ठाकुर का स्मरण अत्यधिक आदरपूर्वक लिया जाता है। संगीत तथा संगीतशौ को उनके कार्यों द्वारा प्रतिष्ठित स्थान तक पहुँचाने का दायित्व और कर्तव्य कायत पण्डित विष्णु दिगम्बर जी ने लिया था, उनके इस अनुष्ठानरूपी व्रत को उनके योग्य शिष्य ओमकार नाथ ठाकुर ने अवश्य पूरा करने का प्रयास किया और सफल भी रहे। और शास्त्र का सौन्दर्ययुक्त सामंजस्य विशिष्ट संगीतज्ञों में ही दृष्टिगोचर होता है। प्रतिष्ठ कलाकारों में शास्त्र के प्रति उपेक्षा तथा शास्त्रकारों में संगीत कला के प्रति उदासीनता देखने में आती है। इस उदासीनता को दूर करने के लिए पण्डित ठाकुर ने अपनी कर्तव्य निष्ठा को दिखाते हुए एक आदर्श की स्थापना की।

पण्डित ओमकार नाथ ठाकुर का जन्म बड़ौदा राज्य में जहाज नामक ग्राम में २४ जून सन् १८६७ को एक कुलीन परिवार में हुआ। आपके पिता का नाम पं० गौरी शंकर ठाकुर तथा माता नाम सवेला देवी था। पण्डित जी के बाल्यकाल में इनका परिवार पारिवारिक कलह और अर्थाभाव से पीड़ित था। आपकी माता जी को परिवार के भरण-पोषण के लिए मजदूर करनी पड़ती थी तथा पुत्र ओमकार नाथ को मिल में काम करके अथवा रामलीला में अभिनय करके परिवार की आर्थिक सहायता भी करनी पड़ती थी।

पण्डित ओमकार नाथ जी का कण्ठ बचपन से ही अत्यधिक मधुर था। आपके गायन प्रतिभा से विद्यालय तथा रामलीला में जब भी कविता पाठ करते तो शिक्षक और श्रोतागण भाव विभोर हो जाते। आपको बाल्यकाल से ही संगीत के प्रति अनुराग था। संगीत रूपी अमृत का रसास्वादन करने के लिए हर प्रकार का कष्ट सहने को तत्पर रहते थे। एक बार एक साधु संगीतज्ञ नर्मदा के पार पधारे, उनका गायन सुनने के लिए पण्डित जी अत्यधिक लालायित हुए। किन्तु धन का अभाव होने के कारण पण्डित जी स्वयं नर्मदा तैरकर पार पहुँचे और गीले वस्त्रों में ही संगीत का रसास्वादन करने हेतु गायन स्थल पर पहुँच गये। पिता के निधन के पश्चात् पण्डित जी को अपने ए भविष्य की चिन्ता सताने लगी, किन्तु इसी समय पण्डित जी के सेठ शापुरजी-मंने रजी-डंगाजों को अपना गायन सुनाने का अवसर प्राप्त हुआ। सेठजी ने पण्डित जी के ज्येष्ठ भ्राता पण्डित बाल कृष्ण जी को यह सुझाव दिया कि उन्हें पण्डित विष्णु दिगम्बर जी के सानिध्य में बम्बई संगीत सीखने के लिए भेज दिया जाय। सेठ जी ने मार्ग-व्यय के लिए पण्डित जी को कुछ धन भी दिया। सेठ जी का यह सुझाव मानकर पण्डित जी के घर वालों ने मात्र १३ वर्ष की अवस्था में पण्डित जी को पण्डित विष्णु दिगम्बर जी के पास संगीत सीखने के लिए भेज दिया। मन में संगीत सेवा का व्रत लेकर पण्डित जी बम्बई पहुँच गये उपरोक्त विद्यालय में निःशुल्क रहने, खाने-पीने तथा ६ वर्षों तक संगीत सीखने की शर्त थी। पण्डित जी बड़ी लगन से संगीत सीखते रहे, किन्तु इन्हीं दिनों काठियावाड़ (गुजरात) को एक नाटक कम्पनी बम्बई आई। नाटक

कम्पनी के प्रबन्धक ने पण्डित जी का गायन सुना और अत्यधिक प्रभावित हुआ, वह इन्हें अच्छे वेतन पर नाटक कम्पनी में सम्मिलित होने का आग्रह किया। इस समय पण्डित जी बड़े धर्मसंकट में पड़े। क्योंकि इनके भाई की इच्छा थी कि वे नाटक कम्पनी में नौकरी कर ले किन्तु पण्डित जी संगीत ही सीखना चाहते थे। जब इस बात का पता पण्डित विष्णु दिगम्बर को चला तो उन्होंने इनके भाई से कहा था कि आपने ८ वर्षों का संगीत सीखने का वचन दिया था, अब अगर आप इन्हें ले जाते हैं तो शेष तीन वर्ष का खर्च आपको देना होगा। यह सुनकर पण्डित जी के बड़े भाई ने अपना इरादा बदल दिया क्योंकि उनके पास तीन वर्षों का खर्च देने के लिए धन नहीं था। इस प्रकार पण्डित जी का संगीत सीखने का क्रम पुनः प्रारम्भ हो गया। संगीत की शिक्षा ग करने के बाद पण्डित विष्णु दिगम्बर जी ने पण्डित जी को सन् १६१६ में गाधवं महाविद्यालय का प्रधानाचार्य बनाकर लाहौर भेज दिया, जहाँ पण्डित जी ने अपने दायित्वों का निर्वाहन पूरी तरह से किया।

८ वर्षों तक गुरु पण्डित विष्णु दिगम्बर जी के पास विद्या अध्ययन करने के पश्चात् पण्डित जी अपने घर वापस आ गये। ब्रिटिश साम्राज्य के प्रति असहयोग आन्दोलन में भी पण्डित जी ने सक्रिय भाग लिया। जून, १६२२ में सूरत (गुजरात) की इन्दिरा देवी से उनका विवाह संस्कार सम्पन्न हुआ। विवाहो परान्त पण्डित जी पर गृहस्थी का बोझ भी आ गया। संगीत समारोहों द्वारा अर्जित धन भी परिवार के भरण-पोषण और विवाह हेतु लिए गये कर्ज को चुकाने के लिए अपर्याप्त था।

अतएक पण्डित जी ने नेपाल के महाराजा से सम्मान और धन प्राप्ति की आशा से नेपाल की यात्रा के लिए प्रस्थान किया। पण्डितजी को मार्ग में अनेक कठिनाइयों का सामना करना पड़ा। ६ दिनों की कठिन यात्रा के पश्चात् वे नेपाल के महाराजा के सम्मुख प्रस्तुत हुए। नेपाल नरेश उनकी गायन प्रतिभा से अत्यधिक प्रभावित हुए और पुरस्कार स्वरूप पाँच हजार रुपये देकर पण्डित जी को सम्मानित किया। इसके पश्चात् पण्डित जी ने ३ बार नेपाल की यात्रा की और प्रत्येक बार बड़े से बड़ा सम्मान अर्पित किया।

पण्डित जी ने नेपाल राज्य के अतिरिक्त इटली, फ्रांस, जर्मनी, बेलजियम, स्विट्जरलैण्ड तथा इंग्लैंड इत्यादि देशों का भ्रमण किया और भारतीय शास्त्रीय संगीत के उत्तरोत्तर विकास के लिए महनीय योगदान दिया। इटली देश के शासक बैनीटों मुसोलिनी को अनिद्रा से मुक्ति दिलाना एक प्रमुख घटना है। विदेश यात्रा के समय ही आपको अपनी पत्नी के निधन का समाचार प्राप्त हुआ, जिसे सुनकर आप बहुत व्यथित हुए और स्वदेश वापस आ गये तथा बम्बई (मुम्बई) में ही रहने लगे। आप सन् १६५२ में भारत सरकार की ओर से भारतीय सांस्कृतिक मण्डल लेकर अफगानिस्तान गये, जिसका नेतृत्व भी पण्डित जी ने ही किया, और देश का नाम ऊंचा किया। इसके साथ ही सन् १६५३ में बुडापेस्ट तथा सन् १६५४ में जर्मनी में आयोजित विश्व शान्ति परिषद् में भारत का प्रतिनिधित्व भी किया।

संगीत के क्रियात्मक पक्ष के साथ ही पण्डित जी ने शास्त्रीय पक्ष पर भी बहुत ध्यान दिया। सन् १८३८ में आपने 'संगीतांजलि' पुस्तक के प्रथम भाग की रचना कर प्रकाशित किया, इस पुस्तक में संगीत के कलापक्ष पर प्रकाश डाला गया के मातभार अबतक प्रकाशित हो चुके हैं। इनसाठी भागों के अतिरिक्त पण्डितजी ने की रचना की प्रणव भारती से पण्डित जी ने संगीत के शास्त्रीय पक्षों की समस्याओं का

निराकरण किया है। 'मीतजलि' की रचना में पण्डित जी ने स्वयं रचित स्वरलिपि पद्धति का अनुगमन किया है। इन पुस्तकों की रचना से उनकी विद्वता का महज ही अनुमान लगाया जा सकता है।

पण्डित जी अनेको सम्मान से सम्मानित हुए, जिसमें प्रमुख रूप से सन् १८३० ई० में राजकीय संस्कृत महाविद्यालय, कलकत्ता द्वारा संगीत मार्तण्ड सन् १६३० ई० में विशुद्ध संस्कृत महा विद्यालय, काशी (वाराणसी) द्वारा संगीत सम्राट तथा सन् १९५५ में गणतन्त्र दिवस के शुभ अवसर पर भारत राष्ट्र के राष्ट्रपति द्वारा पद्मविभूषण उपाधि से सम्मानित किया गया। उसके साथ ही १६५० में काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी में श्री कला संगीत भारती के नाम से संगीत महाविद्यालय को स्थापना हुई और पण्डित जी को उसका अध्यक्ष मनोनीत किया गया। पण्डित जी ने वहां अनेक शिष्यों को अपनी कला से योग्य शिष्यत्व प्रदान किया। वर्तमान समय में उनकी शिष्य परम्परा में डा० श्रीमती एम० राजन, वायलिनवादिका उनके शिष्य परम्परा को आगे बढ़ा रही है।

पण्डित ओन्कार नाथ जी शुद्ध शाकाहारी थे तथा कोई नशा इत्यादि का व्यसन भी उनमें नहीं था, किन्तु नदी में तैरने का उन्हें बहुत शौक था। पण्डित जी बहुआयामी व्यक्ति के धनी थे, कला की देवी सरस्वती के वे अनस्य उपासक थे। एक बार गोंडल नरेश के दरबार में गायन प्रस्तुत करने निमन्त्रण प्राप्त हुआ। कलाकारों का आसन श्रोताओं के आसन यह देखकर पण्डित जी ने भरी सभा में कहा कि पान के पश्चात् जमीन पर भी बैठने में तनिक संकोच नहीं होगा किन्तु गायन के समय में कला और उसका अपमान सहन नहीं कर सकता, उनकी यह बात सुनकर गोंडल नरेश ने तत्काल उच्च आसन की व्यवस्था की यह उनके व्यक्तित्व का एक रूप है।

आपको गायकी का सम्बन्ध ग्वालियर घराने से था। स्थाल गायकी इस घराने की प्रमुख विशेषता है। पण्डित जी स्थाल शायन के अतिरिक्त ध्रुपद तथा ठुमरी गायन की प्रस्तुति भी सफलतापूर्वक करते थे। ठुमरी गायन शैली पर ही पण्डितजी ने भजन गाने की नवीन शैली का भी आविष्कार किया। भारत को सुप्रसिद्ध ग्रामोफोन कम्पनी एच० एम० वी० ने पण्डित जी के अनेकों रिकार्ड की रिकार्डिंग की जिनमें प्रमुख रूप से "मैया मोरी मैं नहीं माखन लायो", "जोगी मत जा" तथा "रे दिन कैसे कटिहैं" हैं, जो आज भी भारतीय जनमानस के कानों में गूँज रहे हैं। बालापचारीकी शिक्षा पण्डित जी ने हस्सू हव खाँ के पुत्र औलिया रहमत खाँ से प्राप्त की। इस प्रकार संगीत की सेवा करते करते जीवन के अन्तिम दिनों में आपको पक्षापात हो गया तथा इसी रोगावस्था में २८ दिसम्बर, १६६७ को संगीत-जगत के इस महानायक का स्वर्गवास हो गया।

रविशंकर (सितार वादक)

मैहर के बाबा उस्ताद अलाउद्दीन खाँ के प्रमुख शिष्य तथा प्रख्यात नृत्यकार उदयशंकर के अनुज पं० रविशंकर न केवल भारत के, अपितु अन्तर्राष्ट्रीय जगत के शीर्षस्थ सितार वादक हैं। भारतीय शास्त्रीय संगीत को विदेशों में लोकप्रिय बनाने का सर्वाधिक श्रेय आप ही को है। आपके पिता पं० श्यामाशंकर बड़े विद्वान् तथा संगीत प्रेमी थे। नृत्य-कला से उन्हें विशेष प्रेम था। जीवन के अन्तिम बीस वर्षों का समय उन्होंने यूरोप और अमेरिका में ही व्यतीत किया था। वहाँ उन्होंने कानून तथा राजनीति की उच्च शिक्षा प्राप्त की थी एवं केलिफोर्निया यूनिवर्सिटी में वेदांत-दर्शन का निःशुल्क अध्यापन भी किया। पं० रविशंकर का जन्म ७ अप्रैल, १८२० को वाराणसी में हुआ। चार भाइयों में आप सबसे छोटे हैं। प्रारंभ में

रविशंकर को नृत्य की शिक्षा मिली और १८ वर्ष की आयु तक ये अपने भ्राता उदयशंकर की नृत्य मण्डली में कार्यरत रहे। यहीं आप (सन् १८३५ में) महर के उ० अलाउद्दीन खाँ के सम्पर्क में आये। उस्ताद इनकी कार्यदक्षता, कुशाग्र बुद्धि और संगीत के प्रति गहन रुचि देखकर बहुत प्रभावित हुए। सन् १८३८ में रवि जी मैहर आ गए और उ० अलाउद्दीन खाँ का शिष्यत्व ग्रहण करके संगीत की कठोर साधना में लग गए। छह वर्षों की घनघोर तपस्या के बाद ये सितार वादन में पूर्णतः दक्ष हो गए। इनकी गुरु भक्ति, लक्ष्य के प्रति जाग रुकता तथा संगीत में आश्चर्यजनक उन्नति देखकर सन् १९४१ में उ० अलाउद्दीन खाँ ने अपनी सुपुत्री अन्नपूर्णा (सुरबहार की अन्यतम कलाकार) के साथ इनका विवाह कर दिया। रवि जी की सांगीतिक प्रतिभा दिनोंदिन बढ़ती ही गई। श्रोता इनका सितार वादन सुनकर सम्मोहित होने लगे। आकाशवाणी के लिए इन्होंने अनेक वाद्यवृन्द रचनाएँ की तथा राष्ट्रीय वाद्यवृन्द के प्रमुख संचालक पद पर कुछ समय कार्य भी किया। काबुलीवाला, गोदान, अनुराधा आदि फ़िल्मों में संगीत भी इन्होंने दिया। सन् १८६२ में, बंबई में किन्नर स्कूल ऑफ़ म्यूजिक की स्थापना की। आपके प्रमुख शिष्यों में उमाशंकर मिश्र, गोपाल कृष्ण, जया वोस, शंभूदास, शमीम अहमद, शंकर घोष, कार्तिक कुमार तथा जॉर्ज हैरिसन (बीटल गायक) के नाम उल्लेखनीय हैं। सन् १८६७ में भारत सरकार ने 'पद्मभूषण' से आपको अलंकृत किया था। विश्व-भर के संगीत प्रेमी इनकी शतायु होने की कामना करते हैं।

बिस्मिल्लाह खाँ (शहनाई वादक)

शहनाई-जैसे वाद्य को लोकप्रिय बनाकर उसे उच्च शिखर तक पहुँचाने का उ० बिस्मिल्ला खाँ ने ही किया। आपके पूर्वज भोजपुर दरबार में शहनाई बादक रहे थे तथा पिता उ० पैगम्बर बरुश भी अपने युग के श्रेष्ठ संगीतज्ञ रहे।

बिस्मिल्लाह खाँ का जन्म सन् १८०८ के लगभग हुआ। मामा उस्ताद अली से इन्होंने शहनाई सीखी। खयाल गायकी की शिक्षा लखनऊ के उस्ताद मुहम्मद हुसैन से प्राप्त की। आपके भाई शम्सुद्दीन खाँ भी उच्चकोटि के शहनाई बादक थे, जिनका निधन हो गया। सन् १८५६ में आपको राष्ट्रपति द्वारा पदक देकर सम्मानित किया गया और सन् १८६७ में भारत सरकार ने 'पद्मभूषण' से अलंकृत किया। शहनाई के सिरमौर बिस्मिल्ला खाँ अपनी विद्या के श्रेष्ठतम कलाकार हैं, जो समस्त विश्व में लोकप्रिय एवं प्रतिष्ठित हैं।